हैं। इस वाले चिकन का तो अख़बार में एडवरटिज़मेंट आता है। उसमें चिकन हैट पहने रहता है।

ओ। ये लड़का तो बड़ा इंटेलिजेन्ट है। कहकर मदन हंसा।

तेजेन्द्र भी हंसकर बोला अख़बार में ये सबसे पहले खाने के आइटम वाले एडवरटिज़मेंट ही देखता है। वाह ! कहकर मदन ने रोहन को थोड़े गौर से देखा। फिर तेजेन्द्र की ओर मुड़ा वैसे यार तू इधर आया किस काम से था? इतने साल गुजरात में बिता कर कुछ महीने पहले ही यहां आया हूं। अब यहीं नौकरी है। इसके स्कूल एडमिशन के लिए चक्कर लगाता रहा। अब थोड़ा सेटल हो गया हूं तो इसके लिए कुछ स्टेशनरी आइटम लेने वास्ते पुराना बाज़ार याद आया। सतपाल अंकल की दुकान खोज रहा था।

> *मुझे क्या अच्छा लगा उस जगह पर दूसरे को बिठाते हुए। मेरी मां तो दो हफ़्ते तक मुझसे बोली भी नहीं, कहती थी कि पुश्तैनी जगह पर दूसरे को बिठाने का सौदा कर डाला बेटे ने। पर भाई, मैं इस बाज़ार से लड़ नहीं सकता।*

ये लै ! कहकर मदन ने माथे पर दो उंगलियां ठोंकी और आगे बोला- भाई, उनकी दुकान उठे हुए ज़माना गुजर गया। वो दुकान छोड़ने को तैयार नहीं थे और बेटा पीछे पड़ा था कि बेचबाच कर पैसा अंटी करो और आराम से घर बैठो। भाव ही यहां की दुकानों के इतने बढ़ गये कि बेटे को लालच आना ही था। अंत में रोज-रोज के टंटे से तंग आकर उन्होंने दुकान उठा ही दी। बड़ी अच्छी दुकान होती थी उनकी। मैं जब भी कॉपी-किताब खरीद कर पैसे देता वे उसे गिनते तक नहीं। बस कहते कि इसी तरह पढ़ाई जमाये रखो। तेजेन्द्र ने उसांस भरी। पचास साल पुरानी दुकान थी उनकी। मोह हो ही जाता है। ऊपर मेरी दुकान से भी कॉलोनी के पचास घरों में सामान जाता था, कितने-कितने लोगों से घरेलू सम्बन्ध बने। मुझे क्या अच्छा लगा उस जगह पर दूसरे को बिठाते हुए। मेरी मां तो दो हफ़्ते तक मुझसे बोली भी नहीं, कहती थी कि पुश्तैनी जगह पर दूसरे को बिठाने का सौदा कर डाला बेटे ने। पर भाई, मैं इस बाज़ार से लड़ नहीं सकता। मैं तो हर महीने की तय रकम बांध कर बीवी-बच्चों को . . . .पापा, मेरी लिस्ट की चीज़ें . . . रोहन ने आहिस्ते से इतना कहकर पिता के कंधे पर थपथपा दिया।

हां, हां। यार, तू तो इसकी चीज़ें खरीदने आया था। मदन को अहसास हुआ तो उसने बात बीच में ही रोक दी।

हां, अब चलूं। कहकर तेजेन्द्र उठा और मदन से पूछा- पर सतपाल अंकल गये कहां?

यहीं, इस बाज़ार में हैं।

यहां! तेजेन्द्र के चेहरे पर आश्चर्य उभरा। गये ही नहीं बेटे के साथ। एक नये खुले और बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर में नौकरी पकड़ ली। क्या-क्या नहीं मिलता है उस स्टोर में। वहां स्टेशनरी वाला सेक्शन देखते हैं। कहते हैं कि यही काम मैं ढंग से समझता हूं। हो जाती है मुलाकात कभी आते-जाते।

तेजेन्द्र ने उस स्टोर का रास्ता पूछा तो मदन सीढ़ियों से ऊपर आकर रास्ता बाक़ायदा बता-समझा गया।

डिपार्टमेंटल स्टोर इतना बड़ा और भव्य था कि एकबारगी तेजेन्द्र की आंखें ही चौंधिया गयीं। असमंजस में खड़े-खड़े कुछ क्षण ही बीते होंगे कि एक स्मार्ट सी लड़की लपकती हुई आयी और बोली येस सर!

स्टेशनरी सेक्शन, प्लीज़। तेजेन्द्र झटके से बोला।

दिस वे, सर। कहती हुई वह लड़की तेजेन्द्र के आगे-आगे चल पड़ी। सुर्ख लाल स्कर्ट पहने हुए वह अपनी ऊंची एड़ी वाली जूतियों से ट्याक् ट्याक् जैसी आवाज़ निकालती जा रही थी। राइट हियर, सर! कहकर उस लड़की ने तेजेन्द्र को जिस काउंटर पर खड़ा किया वहां उसकी स्कर्ट के रंग का ही टीशर्ट पहना हुआ एक आदमी खड़ा था। ऐट योर सर्विस, सर। उस आदमी ने कहा, तो अब पूरी सफेद हो चुकी मूंछों तथा पहले से बहुत झटक गये शरीर के बावजूद उसे सतपाल अंकल के रूप में पहचानने में तेजेन्द्र को दिक्कत नहीं हुई।

पहचाना अंकल, मैं गट्टू। आपकी दुकान से . . .।

योर रिक्वायरमेंट, सर। उन्होंने तेजेन्द्र की बात काटकर इतना कहा तो उसे समझ में नहीं आया कि उन्होंने जानबूझ कर उसकी बात काटी है या वाकई पहचान नहीं पाये हैं। पर रिक्वायरमेंट शब्द सुनते ही रोहन ने जेब से अपनी लिस्ट निकाली और उन्हें थमा दी। लाल टीशर्ट वाले आदमी ने एक बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर के अनुभवी सेल्समेन की सक्रियता से रोहन की ज़रूरत का सारा सामान आनन-फानन में एक लाल ट्रे में सजाकर सामने रख दिया और कहा पेमेंट ऐट दैट कॉर्नर काउंटर, सर। तेजेन्द्र चुपचाप ट्रे उठाकर उस काउंटर की तरफ बढ़ गया।

भुगतान करने के बाद बाहर जाते हुए तेजेन्द्र ने एक क्षण ठिठक कर पीछे इस उम्मीद में देखा कि शायद अब वे उसे एक नज़र देख रहे हों। पर नहीं. . वे तो काउंटर पर आ खड़े हुए एक नये ग्राहक की ज़रूरत का सामान निकालने में व्यस्त थे। ■